

डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिकी सत्र 14ः सदोम और अमोराः उत्पत्तिकी

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिकी पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र 14 है, सदोम और अमोरा, उत्पत्तिकी 18-19।

पाठ 14 विशेष रूप से सदोम और अमोरा से संबंधित है, और मुझे लगता है कि तीन चीजें हैं जिन पर हम इस बात के संदर्भ में ध्यान केंद्रित करेंगे कि हम इससे कैसे सीख सकते हैं।

पहला वह नकट संबंध है जो परमेश्वर और अब्राहम के बीच विकसित हो रहा है, एक घनिष्ठ संबंध, एक गहरा संबंध। दूसरी बात जो मुझे लगता है कि हम इससे सीखते हैं वह यह है कि अब्राहम मध्यस्थता की अपनी भूमिका, दूसरों की ओर से मध्यस्थता, और दूसरों के लिए अपनी देखभाल और रुचि को इंगित करना जारी रखेगा। यह हमें अध्याय 12, श्लोक 3 में दिए गए वादे की याद दिलाएगा, जहाँ यह अब्राहम को सभी लोगों के लिए आशीर्वाद के माध्यम के रूप में बताता है और कैसे उसकी एक बहुत ही महत्वपूर्ण मध्यस्थता की भूमिका है।

तीसरी बात जिसके बारे में हम आज बात करना चाहेंगे वह है परमेश्वर का न्याय और दया। सदोम और अमोरा के बारे में बात करने से पहले, हम अध्याय 18, आयत 1 से 15 से शुरू करते हैं, जो अब्राहम द्वारा तीन आंगंतुकों को दिए गए आतिथ्य से संबंधित है। जब प्राचीन काल में परंपरा की बात आती है, तो आतिथ्य को बहुत महत्व दिया जाता था।

अर्थात्, यात्रियों का स्वागत और स्वागत, और यह अत्यधिक अपेक्षित था कि जब यात्री आपके पास आएं, तो आप उनके लिए व्यवस्था करेंगे। यह देखते हुए कि निश्चित रूप से, आपके पास उस तरह की होटल प्रणाली नहीं थी जो आज यात्रियों के पास है। अब, जब हम तीन आंगंतुकों की बात करते हैं, तो यह प्राचीन काल और प्रारंभिक चर्च दोनों में, तीन आंगंतुकों की पहचान के साथ संघर्ष करने में व्याख्याकारों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

और इस अनुच्छेद में तीन आंगंतुकों की पहचान समझाने के लिए विभिन्न शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। सबसे पहले, ध्यान दें कि उन्हें पुरुषों के रूप में पहचाना गया है, और आप इसे पद 2 में देखेंगे। पद 2 में, अब्राहम ने ऊपर देखा और तीन पुरुषों को पास में खड़े देखा। और फिर, उदाहरण के लिए, पद 16 में, जब पुरुष जाने के लिए उठे।

इसलिए, मनुष्य प्रभु की अभिव्यक्तिका संकेत देते हैं और साथ ही उनके साथ आने वाले स्वर्गदूत भी। तीनों में से एक को प्रभु के रूप में पहचाना जाता है। उदाहरण के लिए, श्लोक 10 में लिखा है, ध्यान दें कि प्रभु छोटे अक्षरों में है, जिसका अर्थ है कि यहाँ हबिरू शब्द परमेश्वर का वाचा का व्यक्तित्व नाम है, यही वा।

तब प्रभु ने कहा। और फिर, श्लोक 13 पर ध्यान दें, तब प्रभु ने कहा। इसके अलावा, 14 में, इन तीनों में से, हम पाएंगे कि बोलने वालों में से एक की पहचान यही वा के रूप में की गई है।

और फिर जब हम अध्याय 18 में आगे देखते हैं, तो हम पाते हैं कि वहाँ स्वर्गदूत हैं। खैर, विशेष रूप से, उदाहरण अध्याय 19, श्लोक 1 है, जहाँ यह कहा गया है कि दो स्वर्गदूत शाम को सदोम पहुँचे। इसलिए, प्रभु अब्राहम के साथ पीछे रहता है, और वे श्लोक 16 से अध्याय 18 के अंत तक चर्चा करते हैं।

तीन में से दो आदमी वास्तव में स्वर्गदूत हैं जो लूत को बचाने के उद्देश्य से सदोम और अमोरा जाते हैं। इसलिए, जब इन तीन लोगों की बात आती है, तो अब्राहम उनका बहुत स्वागत करता है। अगर आप गौर करें, तो अध्याय 18 की आयत 2 में लिखा है, और यह अब्राहम की ओर से स्वागत और वनिम्रता का कार्य है।

यहाँ वर्णन अब्राहम की प्रशंसा करता है क्योंकि यह कहता है कि उसने जल्दी से उनका स्वागत किया। फिर यह वर्णन करता है कि पद 3 में आगे क्या हुआ। पद 6 में, यह पढ़ता है, तो, इस तरह का वर्णन, फिर से 7 में, वह पुरुषों के लिए पानी के साथ-साथ उनके लिए आराम और भोजन भी प्रदान करता है। और इसलिए यह सब महत्वपूर्ण है क्योंकि हम लूत के साथ एक वरिधाभास देखेंगे।

क्योंकि 19, श्लोक 1 में ध्यान दें, दो स्वर्गदूत शाम को सदोम पहुँचे और लूत शहर के प्रवेश द्वार पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा, तो वह उनसे मिलने के लिए उठा और अपना चेहरा ज़मीन पर झुकाकर दण्डवत् किया। खैर, हम इस अंश की अधिक व्याख्या नहीं करना चाहते, लेकिन मुझे लगता है कि उत्पत्ति के विवरण के सामान्य स्वर में, अब्राहम और लूत के बीच यह अंतर रहा है।

और मुझे लगता है कि हमारे पास एक और भी हो सकता है। जबकि लूत दो स्वर्गदूतों का आतिथ्य करता है, और, बेशक, वह उन्हें तुरंत दो स्वर्गदूत नहीं समझता है। हमारे लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि अब्राहम महान धार्मिकता और भलाई का व्यक्ति था।

और जब लूत की बात आती है, तो अफसोस की बात है कि वह शहर के प्रवेश द्वार पर बैठा है। जहाँ प्रवेश द्वार पर, वहाँ आपको सभी प्रकार की सामुदायिक गतिविधियाँ मिलेंगी, विशेष रूप से प्रवेश द्वार पर वाणिज्यिक गतिविधि और साथ ही न्यायिक गतिविधि। इसलिए अध्याय 19 से आपको जो धारणा मिलती है, वह यह है कि लूत इस बिंदु तक, सदोम शहर का इतना एकीकृत हिस्सा बन गया है कि उसे शहर के प्रवेश द्वार पर पाया जा सकता है।

जबकि अब्राहम हेबरोन शहर के बाहर रहता है। अब, जब इन आगंतुकों की बात आती है, तो कभी-कभी यह भ्रमति करने वाला हो सकता है। किस अर्थ में ये पुरुष थे? किस अर्थ में उन्होंने खुद को पुरुष दिखाया? लेकिन वास्तव में, ये प्रभु और उनके साथ आए दो स्वर्गदूत हैं।

यह एक अभिव्यक्ति है, एक आभास है, जो हमें प्रभु के साथ एक मनुष्य के रूप में मिलाता है। कोई अवतार नहीं। उन्होंने मानवता का स्वभाव नहीं अपनाया है जैसा कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह में पाते हैं।

इसलिए, हम पूरे शास्त्र में मनुष्य के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकटीकरण देखेंगे। जब प्रभु

और अब्राहम के बीच बातचीत की बात आती है, तो पहला संवाद सारा से संबंधित है। और श्लोक 12 और 13 में सारा की हंसी।

फरि प्रभु ने कहा कि उसे एक बेटा होगा। यह श्लोक 10 में है। इसलिए सारा, श्लोक 12 में, खुद पर हंसी।

वह श्लोक 11 में कहती है कि वह बच्चे पैदा करने की उम्र पार कर चुकी है। संभवतः यह इस बात का संकेत है कि उसे रजोनिवृत्ति हो चुकी है। श्लोक 12.

तो, सारा ने मन ही मन हँसते हुए कहा। जब मैं थक गई हूँ और मेरा मालिक बूढ़ा हो गया है, तो अब मुझे यह खुशी मिल रही है। दूसरे शब्दों में, उसके दमिाग में यह सबसे बुरा समय नहीं हो सकता।

शारीरिक रूप से उसके लिए बच्चा पैदा करना असंभव है। अंतर यह है, जैसा कि श्लोक 14 में कहा गया है, क्या प्रभु के लिए कुछ भी कठिन है? मुद्दा यह है कि यह अलंकारिक प्रश्न कहता है, नहीं, प्रभु के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। और सारा और अब्राहम अपनी संतान और समृद्धि के लिए प्रभु पर निर्भर हैं और वास्तव में हमेशा से ही उन पर निर्भर रहे हैं।

तो, यह प्रभु ही है जो इस असंभवता को संभव बना देगा। मुझे लगता है कि यह ईसाई पाठकों के लिए एक अनुसमारक है, जो हमें लूका 1, श्लोक 37 में मिलता है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि, फरि से, जब वरजनि मैरी की बात आती है तो भगवान के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। फरि भी वह पवतिर आत्मा के सशक्तीकरण से यीशु को गर्भ धारण करेगी।

इसे ध्यान में रखते हुए, आपको अध्याय 17 में याद होगा, जब अब्राहम को पता चलता है कि उसका एक बेटा होगा जो उसके अपने शरीर से और उसकी पत्नी के शरीर से आएगा। वह भी अपनी उम्र के कारण हसा था। और इसलिए, अध्याय 17 के श्लोक 17 और 18 में, वह हसा।

मुझे लगता है कि यहाँ जो बात ध्यान में है, वह यह कि दोनों हँसे, हमें यह एहसास दिलाता है कि अब्राहम और सारा सह-भागी हैं। उसकी ओर से स्वामित्व की भावना, कि इस घटना में भी उससे विश्वास की अपेक्षा की जाती है। तो, वादा यह है कि एक साल के समय में, सारा बच्चे को जन्म देगी।

वादा किए गए बेटे के बारे में इस तरह की विशिष्टता पहले के अध्यायों में नहीं दी गई है। लेकिन यहाँ यह है, एक साल के समय में। सारा डर गई, श्लोक 15।

तो, वह हँसी और बोली, मैं नहीं हँसी। और इसलिए, बेशक, सवाल उठा: मुझे लगता है कि तुम हंस रहे थे। वह कहती है, अरे नहीं, मैं नहीं हंस रही हूँ।

यह दिलचस्प है, है न, कि प्रभु को पता है कि उसने ऐसा किया है, भले ही श्लोक 12 में कहा गया है कि सारा खुद पर हंस रही थी। वह अपने मन में हंस रही थी। लेकिन प्रभु को उसके विचारों, उसके रवैये का अंदाजा था।

और वह उसे सही करता है, हाँ, तुम हँसे थे। तो मुझे लगता है कि हम इस घटना से जो देखना चाहते हैं वह यह है कि उनके घर में, इस तरह के जीवन की सेटिंग में, तम्बू के भीतर, और अब्राहम और सारा के रश्ते में, जब वह पानी प्रदान करता है और वह भोजन प्रदान करती है, और साथ में वे रोटी और झुंड से भोजन प्रदान करते हैं, तो उनका सह-स्वामित्व होता है और दोनों को उन वादों को पूरापूत करने के लिए विश्वास में चलना चाहिए जो परमेश्वर लाने जा रहा है। तो, यह सुझाव देता है, है न, अब्राहम, उसके परिवार और प्रभु परमेश्वर के बीच एक और भी करीबी रश्ते की ओर एक कदम आगे।

यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी तरह हमने वाचा को समझा है। यह एक ऐसा रश्तिता है जैसे परमेश्वर ने संभव बनाया है, क्योंकि वही है जिसने वाचा के रश्ते की शुरुआत की और इस रश्ते को बनाए रखा और बनाए रखा। अब हम अध्याय 18 के उत्तरार्ध में आते हैं, श्लोक 16 से 33 तक।

यहाँ, प्रश्न परमेश्वर के न्याय और दया का है। इसलिए, पद 16 में, यह कहा गया है, जब पुरुष जाने के लिए उठे, तो उन्होंने सदोम की ओर देखा, और अब्राहम उनके साथ-साथ चला ताकि वे उन्हें उनके मार्ग पर ले जाएँ। अब, हमें मैदान के शहरों, सदोम और अमोरा के बारे में जो कुछ हमने सीखा है, उसे सामने लाना है।

इस संबंध में अध्याय 13 और 14 हैं। याद रखें कि अध्याय 13 में, लूत ने वह भूमि चिनी जो सबसे समृद्ध और सुंदर थी और जो उसके झुंड और उसके कृषि उपकरणों के लिए उपयोगी थी। परमेश्वर ने अब्राहम को एक दर्शन दिया कि अब्राहम की देखभाल कैसे की जाएगी।

अध्याय 13 के उस संदर्भ में, लेखक हमें बताता है कि सदोम और अमोरा दुष्ट शहर थे। और फिर अध्याय 14 में, हमें बताया गया है कि कैसे पूर्वी देशों के संघ ने पश्चिमी देशों के संघ के साथ युद्ध किया और पश्चिम में, सदोम के राजा, जहाँ अब्राहम रहता था, को पराजित किया गया, और सारी संपत्ति और परिवारों को भी बंधक बना लिया गया। अब्राहम ने अपना खुद का संघ बनाया, और वह और उसके लोग उत्तर की ओर दौड़ पड़े ताकि उन्हें पकड़ सकें। उन्होंने लूत और उसके परिवार और लूटी गई अधिकांश संपत्ति को छुड़ाया।

और फिर, अपनी वापसी पर, उसने दो राजाओं का सामना किया, यरूशलेम का राजा, शालेम, जिसे मेलकीसेदेक कहा जाता है, और सदोम का राजा। और यह सब दमिग में लाते हुए और अध्याय 19 में भविष्यवक्ताओं के साथ-साथ सुसमाचारों में सदोम और अमोरा के नरितर संदर्भों में क्या होता है, सदोम और अमोरा दुष्टता का नारा बन गए, लगभग नरिदोषों के साथ घनीने दुरव्यवहार और सभी प्रकार की नैतिक कमियों और भ्रष्टाचार का पर्याय बन गए। हम सदोम और अमोरा और मैदान के अन्य शहरों को कहाँ पाते हैं, हमें नहीं पता।

हालाँकि, अधिकांश वदिवान, मोटे तौर पर, समझते हैं कि सदोम और अमोरा और मैदान के शहर मृत सागर के पानी के नीचे दक्षिणी छोर पर हैं। और शायद किसी दिन हमारे पास वास्तव में यह पुष्टि करने के लिए तकनीक होगी कि यह

मामला है। लेकिन यह हमारी कामकाजी समझ होनी चाहिए कि सिदोम और अमोरा कहाँ पाए जा सकते हैं।

अब, जब प्रभु और अब्राहम के बीच इस संवाद की बात आती है, तो हम यह पहचानना चाहते हैं, जैसा कि मैंने कई मौकों पर कहा है, कि अब्राहम शपथित्व के स्कूल में है। वह इन यात्राओं और परमेश्वर के साथ जुड़ाव और वभिनिन परसिधतियों के दौरान सीख रहा है कि वह प्रभु पर अधिक से अधिक भरोसा करना सीख रहा है। और हालाँकि उसे अभी भी अपनी असफलताएँ झेलनी पड़ रही हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, हम पाते हैं कि प्रभु में उसका विश्वास बढ़ रहा है।

और इसलिए, यहाँ जो बात बहुत महत्वपूर्ण है वह यह है कि कैसे प्रभु अब्राहम को अपने भरोसे में लेते हैं, कि वह एक विश्वासपात्र है, और यह कि सीखने के लिए एक सबक है, यह न केवल इस घनापिठ संबंध को दर्शाता है, बल्कि न्याय और दया की बात आने पर परमेश्वर के चरित्र के बारे में भी सीखने को मिलाता है। तो, आइए हम सब मलिकर श्लोक 17 को देखें। तब प्रभु ने कहा, देखो, प्रभु अब्राहम को अपनी योजना बताने जा रहा है, उसे प्रकट करने जा रहा है।

यह अपने आप में एक विशेष संबंध को दर्शाता है जब वह अब्राहम के साथ साझा करता है कि क्या होने वाला है। और फिर, श्लोक 18 में, अब्राहम नश्चिति रूप से एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा, और पृथ्वी पर सभी राष्ट्र उसके द्वारा धन्य होंगे। इसलिए, हम पाते हैं कि प्रभु जो प्रकट करने जा रहा है वह उस वाचा से जुड़ा है जिस परमेश्वर ने बनाया था, जो पहली बार अध्याय 12 में पाया गया था, और ये दविय वादे जनिहें परमेश्वर ने शुरू किया है और जो पूरा करने जा रहा है, वे परमेश्वर की योजना के इस अनावरण के लिए एक आधार हैं।

आधार का दूसरा तत्व 19 में है, क्योंकि मैंने उसे चुना है। इसलिए, अब्राहम और उसके वंशजों का परमपूर्ण चुनाव ऐसा है कि वह अब्राहम को सखाएगा, और बदले में, अब्राहम, ऐसा माना जाता है, अपने वंशजों के लोगों को सखाएगा। इसलिए, हम पढ़ना जारी रखते हैं। मैंने उसे इसलिए चुना है कि वह अपने बच्चों को उसके बाद अपने घराने में प्रभु के मार्ग पर चलने के लिए निर्देशित करेगा।

मुझे लगता है कि प्रभु का मार्ग, यह अभवियकत बहुत महत्वपूर्ण है। यह व्यापक है, लेकिन मुद्दा यह है कि प्रभु का मार्ग इस बात से संबंधित है कि परमेश्वर अपने वादा किए गए लोगों और राष्ट्रों के जीवन में अपने संप्रभु शासन का प्रयोग कैसे करता है, और प्रभु के चरित्र का महत्त्व क्या है। और इसलिए, प्रभु के चरित्र को समझने का एक तरीका यह है कि क्या सही और न्यायपूर्ण है।

और इसलिए, वे प्रभु के मार्ग पर कैसे चलते हैं? खैर, उन्हें प्रभु के मार्ग को सीखना होगा, और फिर वे सही और न्यायपूर्ण कार्य करके, प्रभु के चरित्र को नभिाकर और जीकर उसका पालन करते हैं, ताकि, 19 को पढ़ते हुए, प्रभु अब्राहम के लिए वह सब कुछ पूरा करे जो उसने उससे वादा किया था। इसलिए हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभु और अब्राहम को जो कुछ वह समझाने जा रहा है, उसके बीच यह विशेष संबंध बन रहा है। इसलिए, यह आश्चर्यजनक है कि बाइबल में कहीं और हमें बताया गया है कि दोनों के बीच एक संबंध है।

यशायाह 41, श्लोक 8 में, यशायाह कहता है कि अब्राहम, या यशायाह के माध्यम से, अब्राहम परमेश्वर का मतिर है। दोस्ती को एक करीबी, भरोसेमंद रशिते के रूप में ध्यान में रखना चाहिए। नरिगमन 33, श्लोक 11 में, यह मूसा ही था जिसके बारे में कहा गया है कि उसने प्रभु से उसी तरह बात की जैसे एक आदमी अपने दोस्त से बात करता है।

और फिर आपको याद होगा कि यूनान के सुसमाचार के अध्याय 15 की आयत 15 में, यीशु अपने शिष्यों को विश्वासपात्र के रूप में उनके रशिते में और भी करीब लाता है जब वह उन्हें समझाना शुरू करता है कि क्या होने वाला है, उसकी गरिफ्तारी, उसकी मृत्यु, लेकिन उसके आगे उसके पुनरुत्थान के जीवन को देखते हुए। और साथ ही, वे खुद क्या हैं, जैसा कि वह उन्हें प्रभु के मतिरों के रूप में पहचानता है, उनका मशिन यह घोषणा करना है कि परमेश्वर का राज्य पुनर्जीवित प्रभु यीशु के माध्यम से उपलब्ध है। तो यूनान 15, 15.

अब, जब हम अब्राहम और प्रभु के बीच सौदेबाजी की बात करते हैं जैसा कि श्लोक 20-33 में पाया जाता है, तो हमें श्लोक 20 में होने वाली घटना का रहस्योद्घाटन मलित है। और सदोम और अमोरा के खिलाफ रोना इतना बड़ा है, और उनका पाप इतना गंभीर है कि मैं नीचे जाऊंगा। यह मुझे बाबेल के टॉवर की याद दिलाता है, आपको याद होगा कि भगवान यह देखने के लिए नीचे गए थे कि बेबीलोन के लोग क्या कर रहे थे।

इसलिए, वह कहता है, मैं नीचे जाकर देखूंगा कि क्या उन्होंने जो किया है वह उतना ही बुरा है जितना कि मेरे पास पहुंची चीख-पुकार। अगर नहीं, तो मैं जान लूंगा। इसलिए, जब बात पास के शहर हेबरोन के संबंध की आती है, तो आप नीचे जाएंगे, और आप स्थलाकृतिक रूप से नीचे उतरेंगे जो आज मृत सागर है।

श्लोक 22 में, पुरुष पीछे मुड़े और सदोम की ओर चले गए, लेकिन अब्राहम प्रभु के सामने खड़ा रहा। इसलिए, वे पुरुष जो वास्तव में स्वर्गदूत हैं, प्रभु के प्रतिनिधि हैं, यह देखते हुए कि प्रभु ने कहा कि मैं नीचे जाऊंगा, लेकिन वह दो स्वर्गदूतों को भेज रहा है। यह किस अर्थ में है कि वह नीचे जाता है? खैर, तब कोई देख सकता है कि स्वर्गदूत संरक्षण में हैं, और इसका अनुवाद संदेशवाहक के रूप में किया जा सकता है, कि स्वर्गदूत प्रभु के ज्ञान और स्थितिके साथ संरक्षण में हैं, या तो संदेशवाहक के रूप में, या यहाँ कुछ और काम कर रहा है? बहुलता संकेतात्मक और कुछ हद तक अटकलें हैं, लेकिन बस यह उल्लेख करने के लिए कि शायद इससे जो हासिल किया जा सकता है वह यह है कि ईश्वर जो हमने उत्पत्तिके अध्याय 1 और अध्याय 3 और अध्याय 11 में पाया है, इन तीन अवसरों पर जहाँ ईश्वर की बहुलता का उल्लेख किया गया है जहाँ आपके पास बहुवचन सर्वनाम हैं, कि यद्यपि एक ईश्वर है, उस एकता के भीतर एक बहुलता है।

तो, इस बात को ध्यान में रखते हुए, मुझे लगता है कि यहाँ एक उपयोगी विचार यह है कि भगवान मनमानी या अन्यायपूर्ण तरीके से काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे जो कर रहे हैं वह पूछताछ है। वे जांच कर रहे हैं। वे जानना चाहते हैं कि इस चिल्लाहट की प्रकृति क्या है और इसकी गंभीरता क्या है।

अब, अब्राहम यहाँ पर प्रभु से अपनी जाँच में कई अनुरोध करता है कि क्या शहरों को सुरक्षित रखना सही नहीं है क्योंकि वे धार्मिक हैं, और हम इस धार्मिक शब्द को नरिदोष के रूप में समझ सकते हैं; सदोम और अमोरा के शहरों में नरिदोष लोग हैं। इसलिए, श्लोक 23 में, अब्राहम उसके पास गया और कहा,

क्या तुम दुष्टों के साथ नरिदोष, धार्मिक लोगों को भी मटा दोगे? यह नशिचति रूप से परमेश्वर की ओर से न्याय के रूप में नहीं देखा जाएगा। अब, मुझे लगता है कि हमारे यहाँ जो है वह कर्मिक रूप से कम और कम होता जा रहा है यदि 50 लोग हैं तो अंतिम गनि हुए 5 लोगों तक।

तो, मैं जो पाता हूँ वह श्लोक 32 में है, 10 लोग, 5 नहीं, 10 लोग। इसलिए कर्मिक रूप से कम से कम लोगों की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर शहरों को बचा सके। अब, अब्राहम क्या सोच रहा है, उसके दमिग में दो वकिल्प हैं।

और इसका मतलब यह है कया तो शहर पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे, और नरिदोष लोग दुष्टों के साथ नष्ट हो जाएँगे या फिर शहर उन नरिदोष लोगों के कारण नष्ट नहीं होंगे जो वहाँ रहते हैं। वह वास्तव में कोई तीसरा वकिल्प नहीं देखता, लेकिन वास्तव में ऐसा ही होगा क्योंकि लूत के परिवार में से कुछ लोग बच जाएँगे। इसलिए, एक तीसरा वकिल्प है, नरिदोष लूत को छोड़ना, लेकिन दुष्टों के खिलाफ न्याय लाना।

इसलिए, एकमात्र तरीका जिससे वह जान सकता है कि परमेश्वर क्या करने वाला है और मैं जिस बात पर जोर देना चाहूँगा वह है कि वह परमेश्वर से बात करता रहे। जब हम अपने प्रश्न और संदेह लेकर आते हैं तो यह बहुत महत्वपूर्ण होता है। परमेश्वर से बात करते रहें।

उसे सारी पृथ्वी के न्यायाधीश के रूप में पहचाना जाता है। और इसलिए, सारी पृथ्वी के न्यायाधीश के रूप में, दया और न्याय का प्रशासन करने वाले परमेश्वर की भूमिका सीधे तौर पर प्रभु का विशेषाधिकार है। और अब्राहम यह स्वीकार करना सीखेगा कि कैसे परमेश्वर स्पष्ट से परे देख सकता है।

ये दो वकिल्प हमारी सीमतिता, अब्राहम की सीमतिता को दर्शाते हैं। लेकिन परमेश्वर वास्तव में नमिनलखिति वविरण के अलावा कुछ और नहीं समझता। लेकिन, अन्यथा हम नहीं जान पाते कि प्रभु द्वारा लिए गए नरिणय में शामिल सभी बातों के लिए कोई तीसरा वकिल्प भी है।

अब्राहम के लिए वास्तव में एकमात्र उत्तर केवल प्रभु और उनके चरतिर को जानना है। और इसलिए, इसीलिए वह प्रभु के बारे में प्रश्न उठा सकता है: क्या आप दुष्टों के साथ धर्म को भी मटा दोगे? यह हमें अय्यूब के साथ जो कुछ मलिता है, उसकी याद दलिता है। परमेश्वर ने अय्यूब को उसके दुख की पृष्ठभूमि के बारे में कभी पूरी तरह से नहीं बताया।

उसने बस खुद को प्रकट किया, और एक बार अय्यूब ने देखा और बेहतर समझ में आया कि कैसे परमेश्वर न केवल भौतिक दुनिया के संदर्भ में पूरी पृथ्वी का न्यायाधीश है और वह भौतिक दुनिया को कैसे बनाए रखता है, बल्कि वह नैतिक संतुलन, नैतिक दुनिया को भी बनाए रखता है। तो, यह अभविकता, पूरी पृथ्वी का न्यायाधीश, जो श्लोक 19, या बल्कि 25 में पाया जाता है, यह आपसे दूर हो सकता है, क्या पूरी पृथ्वी का न्यायाधीश सही काम नहीं करेगा ? और, बेशक, वह करता है और वह करेगा। अब, प्रभु और अब्राहम के मामले में, वे दोनों करुणा और दया दिखाते हैं।

और यही अब्राहम के साथ काम कर रहा है। मैं मानता हूँ कि उसने, बेशक, अपने भतीजे लूत में नविश किया था, और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अपने भतीजे के बारे में सोच रहा था। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि अब्राहम लूत के प्रति दयालु व्यक्ता है, भले ही वह

लूत के प्रतिकरोधति हो सकता था और लूत से कह सकता था, देखो, मैंने तुमसे कहा था, इस तरह की प्रतिक्रिया।

लेकिन उसे लूत और उसके परिवार और उन सभी लोगों पर दया आती है जो नरिदोष हैं। इसलिए, जब हम अगले अध्याय में आते हैं, अध्याय 19 में, हमारे पास वास्तव में छंद 1-29 में लूत को बचाने वाले स्वर्गदूतों का विवरण है। दुख की बात है कि सदोम और अमोरा के विनाश के बाद, अध्याय 19 के अंत में लूत और उसकी दो बेटियों के साथ उसके अनाचारपूर्ण संबंध के बारे में एक घटना है।

तो, फरि से; हम लूत और अब्राहम के बीच के वरिधाभासों को ध्यान में रखना चाहते हैं और अध्याय 18 में जो कहा गया है, उससे ज्यादा कुछ नहीं, शुरुआत में, यह दनि की गर्मी में, दनि के बीच में था, कि तीन आगंतुक अब्राहम के पास आए। जबकि अध्याय 19 में कहा गया है कि दो स्वर्गदूत शाम को सदोम पहुँचे। तो, दनि और रात के बीच, दौड़ने और बैठने के बीच, अब्राहम की ओर से हेब्रोन के बाहर होने के बीच, लेकिन लूत द्वारा सदोम के जीवन में इतनी बारीकी से एकीकृत और अवशोषित होने के बीच एक अंतर है।

इसलिए लूत की ओर से प्रतिक्रिया हमें फरि से आतिथ्य के महत्व को दिखाती है, जो सुरक्षा प्रदान करना चाहिए, और इसीलिए हमारे पास यह है: हमारे दमिग में जो नशिचति रूप से चरम है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि लूत के दमिग में और उस संस्कृति में भी चरम था, और वह है लूत की बेटियों की बलि देना जब सदोम के पुरुष घर में आए और पुरुषों, स्वर्गदूतों, जो नशिचति रूप से यौन उद्देश्यों के लिए खुद को पुरुषों के रूप में प्रकट कर रहे थे, को जानने पर जोर दिया। पद 5 हमें बताता है कि शहर के लोगों ने उसके घर को घेर लिया। उन्होंने लूत को पुकारा, वे पुरुष कहाँ हैं जो आज रात तुम्हारे पास आए थे? उन्हें हमारे पास ले आओ ताकि हम उन्हें जान सकें, या एनआईवी इसे सही ढंग से समझता है ताकि हम उनके साथ यौन संबंध बना सकें।

शब्द 'नहीं' यौन संबंधों के लिए एक रूपक है, और इसका सबसे अच्छा उदाहरण उत्पत्ति 4 पद 1 है, जहाँ यह कहा गया है कि आदिम अपनी पत्नी हव्वा को जानता था, और वह कैन से गर्भवती हुई। तो, यहाँ जो बात स्पष्ट रूप से ध्यान में है, मुझे लगता है, हमें यह समझना चाहिए कि शहर के ये पुरुष उन पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाना चाहते हैं, जिनमें वे लूत से मिलने आए थे, और एक मेजबान के महान मूल्य और प्रतिष्ठा के कारण, लूत ने अपनी कुंवारी बेटियों को इन पुरुषों को सौंपना चुना ताकि वे उनके साथ यौन संबंध बना सकें। और यह न्यायाधीशों 19 में जो हुआ उसकी याद दिलाता है।

न्यायियों 19 में, हमारे पास एक ऐसी ही घटना है, और वहाँ भी शब्द नहीं नशिचति रूप से यौन संबंधों को संदर्भित करता है। इसलिए, मुझे लगता है, इस विवरण में काफी विडंबना है कि यह लूत ही है जो मानता है कि वह स्वर्गदूतों को इस उल्लंघन से बचा रहा है, जबकि वास्तव में जो होगा वह यह होगा कि स्वर्गदूत लूत को उस आपदा से बचाएंगे जो शहरों पर आने वाली है। शुरू में यह उन पुरुषों से संबंधित था जो दरवाजा तोड़ने और आगंतुकों को उनके यौन सुखों के लिए लै जाने का प्रयास कर रहे थे।

लेकिन स्वर्गदूतों ने हस्तकषेप किया और घर के दरवाजे पर खड़े लोगों को अंधा कर दिया, जैसा कि श्लोक 11 में बताया गया है, युवा और बूढ़े, ताकि वे दरवाजा न पा सकें।

अब, चूँकि उसके घर में दामाद और फरि उसकी दो बेटियाँ और उसकी पत्नी भी शामिल थीं, स्वर्गदूतों ने दयापूर्वक उन्हें सुरक्षा प्रदान करने और भागने का फैसला किया, और दामाद, हम अनुमान लगा सकते हैं, कनानी आबादी के सदस्य थे; शायद वे सदोम शहर के सदस्य थे। उन्होंने इस वचन को अस्वीकार कर दिया, और उन्हें लगा का वह मजाक कर रहा है, हमें बताया गया।

उन्होंने उसे गंभीरता से नहीं लिया। और फरि बाद में हम देखेंगे कि लूत की पत्नी खुद सदोम से जाने के लिए संघर्ष करती है, वह सब जो उसने जाना था और जो वहाँ आकर पक था। इसलिए, पद 15 में स्वर्गदूत कहते हैं, जल्दी करो, अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियों को ले लो जो यहाँ हैं या जब शहर को दंडित किया जाएगा तो तुम बह जाओगे।

और हमें बताया गया है कि जब वह हचिकचाया, तो लूत सदोम में इतना डूबा हुआ था कि वह हचिकचाया। वह इस बात से परेशान था कि वे लोग सच बोल रहे थे या नहीं। और उन लोगों ने उसका हाथ पकड़ लिया, स्वर्गदूतों की ओर से दया का ऐसा असाधारण कार्य, उसकी पत्नी और उसकी दो बेटियों के हाथों में, और उन्हें सुरक्षित रूप से शहर से बाहर ले गए।

क्योंकि प्रभु उन पर दयालु था। और इसलिए, हमें स्वर्गदूतों द्वारा यह उपदेश मिला है, पीछे मुड़कर मत देखो और मैदान में कहीं भी मत रुको। पहाड़ों पर भाग जाओ या तुम बह जाओगे।

और मुझे लगता है कि यहाँ एक नहितार्थ के साथ-साथ एक स्पष्ट वचन भी है। स्पष्ट रूप से, जाहरि है, उन्हें वास्तव में आदेश दिया गया था, प्रोत्साहित किया गया था, और सलाह दी गई थी कि वे शारीरिक रूप से पीछे न देखें। लेकिन मुझे यह भी लगता है कि लूत और उसके परिवार को जो कहा जा रहा है वह यह है कि वे सदोम में अपनाए गए जीवन को अस्वीकार करें, सदोम में जो कुछ हो रहा था उसे अस्वीकार करें।

खैर, हम पाते हैं कि लूत एक धर्मी व्यक्ति था। वह पूरी तरह से दुष्टता के आगे नहीं झुका था, लेकिन उसने समझौता कर लिया था। उदाहरण के लिए, 2 पतरस 2, आयत 7 और 8 में लूत को एक धर्मी व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन वह सदोम की दुष्टता से पीड़ित था।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह मानवीय स्थिति के बारे में सीखने लायक एक सबक है और यह कि जब दुष्टता के साथ समझौता करने की बात आती है तो समझौता तबाही की ओर भी ले जा सकता है। इसलिए, यहाँ हम यह ध्यान में रखना चाहते हैं कि वे कैसे बच निकलते हैं। दुर्भाग्य से, पत्नी खुद को सदोम से दूर नहीं खींच पाती।

और इसलिए, वह नमक का खंभा बन जाती है। हमें यह आयत 26 में बताया गया है। लेकिन लूत की पत्नी ने पीछे देखा, और वह नमक का खंभा बन गई, जो बाद की पीढ़ियों में एक कहावत बन गई।

लूका 17, श्लोक 32. यह आश्चर्यजनक है कि आज भी, मृत सागर के दक्षिणी सरि पर नमक के खंभे पाए जाते हैं। खैर, श्लोक 23 कहता है, जब तक लूत सोर तक पहुँच गया, जो जंगल में और भी दक्षिण में है, तब तक सूरज जमीन पर उग चुका था, इसलिए यह सुबह है, और प्रभु ने स्वर्ग से गंधक, जलती हुई गंधक, सदोम और अमोरा को बरसाया।

यह आपको जल प्रलय की कहानी की याद दिलाता है, जिसमें परमेश्वर ने वर्षा की जसिसे जल प्रलय उत्पन्न हुआ जसिने पूरी दुष्ट मानवता को भस्म कर दिया। श्लोक 29 हमें बताता है कि जब परमेश्वर ने मैदान के शहरों को नष्ट किया, तो उसने अब्राहम को याद किया।

इसके बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें यह नहीं कहा गया है कि उसने लूट को याद किया।

आइए जल प्रलय की घटना पर वापस आते हैं। अध्याय 8, श्लोक 1 में याद रखें कि परमेश्वर ने नूह को याद किया। दूसरे शब्दों में, नूह के प्रति उसकी प्रतिबद्धता।

फरि, अध्याय 8 से, और उस अध्याय में आगे क्या होता है, धीरे-धीरे पानी का उतरना, बाढ़ का पानी का उतरना होता है। और इसलिए, अध्याय 8, श्लोक 1 में, यह कहा गया है कि भगवान ने एक रूआख भेजा। यह हवा के लिए शब्द है, लेकिन पवतिर, या बलकामिझे कहना चाहिए, भगवान की आत्मा, जिसका वर्णन अध्याय 1, श्लोक 2 में किया गया है, जहाँ यह कहा गया है कि भगवान की आत्मा, जिसमें पवतिर आत्मा मानता है, ऊपर मंडरा रही है, सुरक्षा कर रही है।

और इसलिए, परमेश्वर पानी को फैलाने के लिए हवा का उपयोग कर रहा है और इसलिए, नूह और उसके परिवार के उतरने का प्रबंध कर रहा है। इस मामले में, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को याद किया, और इसलिए लूत और उसका परिवार अब्राहम से परमेश्वर के वादों के लाभार्थी हैं क्योंकि लूत के बीच एक परिवारिक रश्तिदार और एक परिवारिक सदस्य के रूप में संबंध हैं, यह देखते हुए कि वह अब्राहम के भाई का पुत्र है। और इसलिए यह आगे कहता है, उसने अब्राहम को याद किया और उसने लूत को उन शहरों को नष्ट करने के लिए आपदा से बाहर निकाला जहाँ लूत रहता था।

अब, हम लूत के वंशजों की ओर बढ़ते हैं। यह उन घनिनी कहानियों में से एक है जो आपको उत्पत्ति में मलिंगी, और इसका संबंध लूत की बेटियों द्वारा किए गए अनाचार संबंधों से है। अब, लूत ने जो अनुरोध किया था वह यह था कि उसे सोअर जाने की अनुमति दी जाए।

लेकिन ध्यान दें कि भले ही स्वर्गदूतों ने उसे सहूलयित दी और लूत को रयियायत दी, लेकिन सदोम और अमोरा में जो कुछ हुआ उससे वह इतना दुखी हुआ कि वह एकांतवासी बन गया। आयत 30 में ध्यान दें कि लूत और उसकी दो बेटियाँ सोअर छोड़कर पहाड़ों में बस गए, क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था। वह और उसकी दो बेटियाँ एक गुफा में रहते थे।

और इसलिए, बेटियों के पास बच्चे पैदा करने की संभावना नहीं थी, और इसलिए उन्होंने उसे शराब पिलाकर नशे में धुत करने और फरि यौन संबंध बनाने का फैसला किया। और श्लोक 32 में ध्यान दें, "... और अपने पति के माध्यम से अपने वंश को सुरक्षित रखें।" यह प्रथा, यह परंपरा, यह जीवन शैली इतनी महत्वपूर्ण थी कि दोनों बेटियों का अपने पति के साथ यह रश्तिता था। नहितार्थ यह है कि अगर वह नशे में नहीं होता और अपने मन में सही सोच नहीं रहा होता, तो नश्चित रूप से वह इसका विरोध करता।

लेकिन वह धोखा खा गया। अब यह हमें नूह के साथ हुई घटना की भी याद दिलाता है। वह एक धर्मपरायण व्यक्ति था, और फरि अपने जीवन के अंत में, वह नशे में धुत हो गया।

और उसके नशे और नग्नता के कारण उसे आशीर्वाद और शाप मिला जो उसने अपने तीन बेटों को दिया, हाम और कनान को उसके नग्नता का उपहास करने के लिए शाप दिया। इसलिए, श्लोक 33 में, "...उस रात उन्होंने अपने पति को शराब पिलाई।" बड़ी बेटी अपने पति के साथ बहुत गई, और फरि अगले दिने, छोटी बेटी ने भी वही किया। अब, जो महत्वपूर्ण है वह यह है का दो ट्रांसजॉर्डन लोगों के समूह उनसे आए थे।

जब बात इसराएल के भविष्य के जीवन की आती है तो ये दोनों बहुत महत्वपूर्ण होंगे। मोआबी और अम्मोनी दो ऐसे समूह थे जो परंपरागत रूप से इसराएल के दुश्मन थे, इतना कि आपको भविष्य के इसराएलियों के खिलाफ इन दोनों, अम्मोनियों और मोआबियों के बीच होने वाले सबसे भयंकर युद्ध देखने को मिलेंगे।

और यह 1 शमूएल और 2 इतिहास में समानांतर अंशों में पाया जाएगा जहाँ ये युद्ध होंगे। और फरि, हमारे पास इसराएल की वरिसत की शुरुआत, एक विशेष तरीके से परमेश्वर के कारुण्य इसहाक के जन्म को लाने और अब्राहम से उनके संबंध के बीच एक वरिधाभास है। हालांकि, लूत की वरिसत सबसे घृणित तरीके से समाप्त हुई।

यही कारण है कि मोआबियों और अम्मोनियों का जन्म अनाचार के कारण हुआ। तो, अब्राहम की इस शक्ति से हमने क्या सीखा है? और वह यह है कि उसके जीवन में, उसके घर में ईश्वरीय उपस्थिति के कारण, परमेश्वर और अब्राहम, दोनों अपने रश्ते में और भी करीब आ गए। इसके अलावा, हम कह सकते हैं कि वह परमेश्वर का विश्वासपात्र बन गया।

परमेश्वर ने उस पर भरोसा किया कि वह जानता है कि क्या होने वाला है। दूसरी बात यह है कि हमने सीखा कि अब्राहम ने एक मध्यस्थ के रूप में दूसरों के लिए दया, कृपा और चिंता दिखाई। और उसने सदोम और अमोरा के लोगों के लिए वनिती की।

और तीसरी बात यह है कि परमेश्वर ने उसे बताया कि कैसे परमेश्वर ने अपने चरित्र में न्याय और दया का सही ढंग से प्रयोग किया, कि यह या तो-या नहीं बल्कि दोनों-में था, लूत के नरिदोष घराने को बचाकर, जो लोग बचने के प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार थे, और फरि दुष्टों के खिलाफ सही न्याय करके। हमारा अगला पाठ, पाठ 15, अब्राहम पर हमारा अंतिम सत्र होने जा रहा है। इसमें अध्याय 20 से 25 को ध्यान में रखा गया है।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज हैं और उत्पत्तिका पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, सदोम और अमोरा, उत्पत्तिका 18-19 है।